YEAR-1998

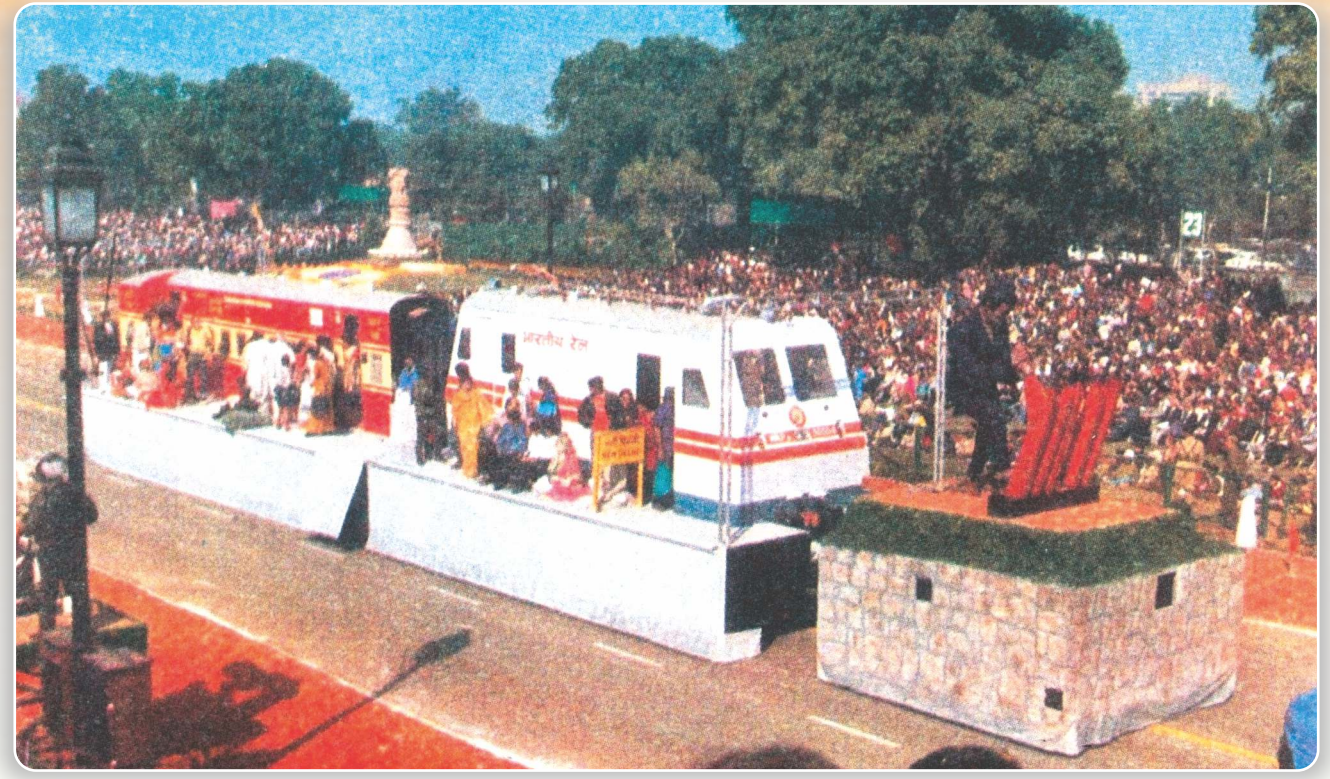

भारतीय रेल

स्वाधीनता के बाद भारतीय रेल में कई गुना वृद्धि हुई है। इसका सुविस्तृत जाल देश के लगभग सभी भागों में फैला है। यह न केवल यात्री यातायात के एकमात्र सबसे बड़े वाहन के रूप में कार्य करती है बल्कि यह कुल सामान के लगभग 75 भाग को दोने या कार्य भी करता है। हाल ही में बहुत हो दुर्गम भूभाग में बनी कोंकण रेलवे का प्रारम्भ हुआ है और विस्तृत गेज–परिवर्तन का कार्य संपन्न हुआ है, जो भारतीय रेल की हाल ही उपल हैं। इस प्रगति साथ ही साथ सवारी डिब्बों का स्तर सुधारने का कार्य तथा डीजल एवं बिजली के आधुनिक रेल इंजनों का निर्माण कार्य भी किया गया है। इस झांकी में सामान्य व्यक्तियों को सरलता से समझ आने वाले दृश्यांकनों से इन सफलताओं को निरूपित किया गया है।

झाँकी के पिछले हिस्से में दर्शाया गया द्वितीय श्रेणी वा दिव्या, देश के कोने–कोने के विभिन्न वर्ग के लोगों को एक करने की रेलवे की अहम भूमिका का प्रतीक है। इस चलते हुए दृश्य को प्लेटफार्म को भिन्न–भिन्न आवाजें स्वाभाविक रूप देती हैं।

INDIAN RAILWAYS

The Indian Railways have grown many folds. After independence with an extensive network covering almost every part of the country, it not only acts as the single largest carrier of passenger traffic but also accounts for almost 75% of the total goods movement. Amongst the recent achievements are the commissioning of the Konkan Railway in extremely difficult terrain and the completion of extensive gauge conversion works. Parallel with these advances have been the up gradation of the coaches as well as the production of state-of-the-art Diesel and Electric locomotives.

The tableau attempts to portray these advances through select visuals easily identifiable for the common man.

The second class coach shown in the rear in typical platform depicts people from all walks of life and all corners of the country signifying the integrating role of the Railways. Sounds from the plantation give a natural back drop to the moving visual.